



पाठ-तेईस

लोक-नृत्य की भूमि : पूर्वोत्तर

अटूट, निर्माण, सुरक्षित, समृद्ध, कर्मकाण्ड, विलक्षण, लामा, मुखौटा, खाल, वृत्ताकार, युद्धास्त्र, चैत्र, संक्रान्ति, जलाशय, गाढ़ा, कढ़ाई, दुपट्टा।

लोक-जीवन और लोक-नृत्य का अटूट सम्बन्ध है। लोक-नृत्य तभी से चले आ रहे हैं, जब से मनुष्य समाज का निर्माण हुआ। इनके माध्यम से हमारी सभ्यता और संस्कृति आज तक सुरक्षित है। लोक-नृत्य की दृष्टि से पूर्वोत्तर भारत अति समृद्ध है। यहाँ के राज्यों में अनेक जातियाँ निवास करती हैं और पर्व-त्योहार के अवसर पर लोक-नृत्यों का आयोजन करती हैं। सब जातियों के लोक-नृत्य कोई न कोई विशेषता लिए हुए होते हैं।

मणिपुरी भाषा में नृत्य को जगोइ कहा जाता है। यहाँ मैतै समाज और जनजातीय समाज में अनेक लोक-नृत्य प्रचलित हैं। लैसेम जगोइ, माइबी-जगोइ, लैमा-जगोइ आदि मैतै लोक-नृत्य हैं। कबुइ-जगोइ, ताइखुल-जगोइ, कुकी-जगोइ आदि जनजातियों के लोक-नृत्य हैं।



नागालैण्ड में जलियाइ, अंगामी, जेसामी, जोखेसाइ आदि जनजातियों के लोक-नृत्य प्रसिद्ध हैं। यहाँ के निवासी लोक-नृत्यों के अवसर पर पैदू, थेकू, तुरही आदि वाद्यों का प्रयोग करते हैं। नागालैण्ड में प्रचलित लोक-नृत्य सदा सामूहिक होते हैं। जलियाइ जनजाति को छोड़ कर अन्य सभी जनजातियों के लोक-नृत्यों में पुरुषों की प्रधानता होती है।



मिजोरम के लोग लोक-नृत्यों में बहुत रुचि लेते हैं। चैरोकान, चेराव, खुवाल्लम, सोलकिया, लाइलम, पाखुपिला आदि इस राज्य के प्रमुख लोक-नृत्य हैं। चैरोकान एक प्रकार का बाँस-नृत्य है, जिसमें प्रायः लड़कियाँ ही नाचती हैं। मिजोरम का सब से प्रचलित लोक-नृत्य है, खुवाल्लम। यह मनुष्य-जीवन के सात कर्मकाण्डों से सम्बन्धित है।



अरुणाचल का मोम्पा-नृत्य बड़ा विलक्षण है। इसमें लामा मुखौटों का प्रयोग करते हैं। वे कभी-कभी शेर की खाल पहन कर भी नृत्य में भाग लेते हैं। इस राज्य में मिस्मी, डफला, आपातानी, तागिन, खम्पती, सिङ्फो, नोक्ते, वांचो आदि जनजातियों के लोक-नृत्य मनमोहक होते हैं।



मेघालय में खासी और गारो क्षेत्र में लोक-नृत्य खुले मैदानों में किया जाता है। खासी लोक-नृत्य में स्त्री-पुरुष अलग-अलग वृत्ताकार नृत्य करते हैं, जिसमें स्त्रियों का वृत्त पुरुषों के वृत्त के भीतर होता है। नृत्य में केवल अविवाहित स्त्रियाँ ही भाग ले सकती हैं, जब कि पुरुषों पर ऐसा कोई बन्धन नहीं है। मेघालय के लोग पासतोह और नासतोह नामक तेज गति



वाले लोक-नृत्य हाथ में युद्धास्त्र लेकर करते हैं। यह जयन्तिया में सामाजिक उत्सवों के अवसर पर किया जाता है। गारो लोगों में गाला और वाङ्मगाला नामक लोक-नृत्य प्रचलित हैं। मेघालय के लोक-नृत्यों में लोंगाई, सिरनाई और साद लुखिमाई भी प्रसिद्ध हैं। ये मूलतः कृषि सम्बन्धी नृत्य हैं।

असम राज्य के लोक-नृत्य, बिहु के आकर्षक रूप से भला कौन परिचित न होगा। यह चैत्र संक्रान्ति से प्रारम्भ होता है। बिहु लोक-नृत्य के अनेक रूप हैं। जैसे – गोरु बिहु, मानुह बिहु, रंगोली बिहु, माछ बिहु, कगाली बिहु आदि। रंगोली बिहु को बोहाग बिहु भी कहा जाता है। बिहु लोक-नृत्य का सम्बन्ध कृषि-व्यवस्था और मानव-जीवन की भावनाओं से है। इसमें प्रेम भरे गीत गाए जाते हैं। बिहु के अवसर पर किसान अपने गाय-बैलों को जलाशय में स्नान कराने ले जाते हैं और उन्हें बैंगन और खीरे अर्पित करते हैं। यह आर्थिक समृद्धि की कामना से किया जाता है। बिहु में भाग लेने वाली युवतियाँ अपने-नृत्य-वस्त्रों पर गाढ़े लाल रंग से कढ़ाई करती हैं। वे एक लाल रंग का दुपट्टा जैसा वस्त्र भी धारण करती हैं, जिसे रिहा कहा जाता है। यह उनकी युवावस्था की पूर्णता को प्रकट करता है। बिहु अत्यन्त मोहक लोक-नृत्यों में से एक है।

त्रिपुरा राज्य में त्रिपुरी और कोकबोरोक जनजातियों के लोक-नृत्य कृषि, शिकार और मनोरंजन से सम्बन्ध रखते हैं। जब से वहाँ बंगाली लोगों का प्रभाव बढ़ा है, तब से बंगाली लोक-नृत्य भी प्रचलित हुए हैं। इससे त्रिपुरा के लोक-नृत्यों का एक नया रूप उभरा है।

हमें पूर्वोत्तर अंचल के सभी लोक-नृत्यों को उनके मूल रूप में सुरक्षित रखने और सारे संसार को लोक नृत्य संस्कृति से परिचित कराने की आवश्यकता है।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

अटूट	=	न टूटने वाला, मजबूत।
निर्माण	=	रचना, बनाने या रचने की क्रिया।
वाद्य	=	बाजा।
कर्मकाण्ड	=	धर्म सम्बन्धी कर्म, यज्ञादि।
विलक्षण	=	अलौकिक, असाधारण।
लामा	=	तिब्बत और मंगोलिया के बोद्धों का धर्माध्यक्ष और शासक।
वृत्त	=	गोलाकर।
संक्रान्ति	=	सूर्य या किसी ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करना।
जलाशय	=	झील, तालाब।
कामना	=	इच्छा, चाह।

2. उत्तर दीजिए :

- (क) लोक-नृत्य कब से चले आ रहे हैं ?
- (ख) मणिपुरी भाषा में नृत्य को क्या कहा जाता है ?
- (ग) मणिपुर में कौन-कौन से मैतै लोक-नृत्य प्रचलित हैं ?
- (घ) मैतै लोक-नृत्य के अलावा मणिपुर में और कौन-कौन से लोक-नृत्य प्रचलित हैं ?
- (ङ) नागालैण्ड में कौन-कौन सी जनजातियों के लोक-नृत्य प्रचलित हैं ?
- (च) नागालैण्ड के लोक-नृत्यों में कौन-कौन से वाद्यों का प्रयोग होता है ?
- (छ) मिजोरम के प्रमुख लोक-नृत्य कौन-कौन से हैं ?
- (ज) मिजोरम का सबसे प्रचलित लोक-नृत्य कौन-सा है और उसकी क्या विशेषता है ?
- (झ) अरुणाचल में कौन-कौन सी जनजातियों के लोक-नृत्य प्रचलित हैं ?

- (ज) खासी लोक-नृत्य की विशेषताएँ क्या हैं ?
- (ट) जयन्तिया में सामाजिक उत्सवों के अवसर पर कैसे लोक-नृत्य किए जाते हैं ?
- (ठ) गारो लोगों में कौन-कौन से लोक-नृत्य प्रचलित हैं ?
- (ड) मेघालय के प्रसिद्ध लोक-नृत्य कौन-कौन से हैं ?
- (ढ) बिहु लोक-नृत्य के कौन-कौन से रूप होते हैं ?
- (ण) बिहु लोक-नृत्य की विशेषताएँ लिखिए।
- (त) त्रिपुरा के लोक-नृत्य किससे सम्बन्धित हैं ?
- (थ) लोक-जीवन से लोक-नृत्य का सम्बन्ध कैसा है ?
- (द) पूर्वोत्तर के प्रमुख लोक-नृत्यों के नाम लिखिए।
- (ध) आपके देखे हुए किसी लोक-नृत्य का वर्णन लगभग दस वाक्यों में लिखिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

अटूट	-----
समृद्ध	-----
विलक्षण	-----
मुखौटा	-----
निर्माण	-----
सुरक्षित	-----
युद्धास्त्र	-----
गाढ़ा	-----
युवावस्था	-----
विशिष्ट	-----

4. तालिका को ध्यान से देखिए, पढ़िए और वाक्य बनाइए :

माइबी-जगोइ कबुह-जगोइ चेरोकान खुवाल्लम मोम्पा-नृत्य नासतोह वाङ्मगाला लेंघाई रंगोली बिहु कगाली बिहु	मणिपुर/मिजोरम/अरुणाचल मेघालय/असम	का	प्रसिद्ध	लोक-नृत्य	है।
--	-------------------------------------	----	----------	-----------	-----

5. सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत कथन के आगे (X) का निशान लगाइए :

- (क) मणिपुरी भाषा में नृत्य को जगोइ कहा जाता है। ☐
- (ख) पैदु नागालैण्ड के लोक-नृत्यों में प्रयुक्त एक वाद्य है। ☐
- (ग) सोलकिया अरुणाचल का एक लोक-नृत्य है। ☐
- (घ) सिरनाई त्रिपुरा का लोक-नृत्य है। ☐
- (ङ) रंगोली बिहु को बोहाग बिहु भी कहा जाता है। ☐

6. ध्यान से पढ़िए, समझिए और याद रखिए :

हिन्दी में कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनका प्रयोग अनेक शब्दों के बदले किया जाता है, जैसे –

- अजन्मा - जिसका जन्म न हो।
अनुपम - जिसकी उपमा न हो।
अपार - जिसका पार न हो।
अदृश्य - जो दिखाई न दे।
अज्ञ - जो न जानता हो।
अनाम - जिसका नाम न हो।
अज्ञानी - जो कुछ नहीं जानता।
अवैतनिक - बिना वेतन के काम करने वाला।
आस्तिक - ईश्वर में विश्वास रखने वाला।
आत्महत्या - अपनी हत्या स्वयं करना ॥
उपर्युक्त - ऊपर कहा गया।
कुलीन - जो अच्छे कुल में जन्मा हो।
दत्तक - जो पुत्र गोद लिया गया हो।
दुराचारी - बुरे आचरण वाला।
निराकार - जिसका आकार न हो।

निराधार	- जिसका कोई आधार न हो।
निर्दय	- जिसमें दया न हो।
नास्तिक	- ईश्वर में विश्वास न रखने वाला।
पारंगत	- जो किसी विषय का पूर्ण विद्वान हो।
फलाहारी	- केवल फल खाकर रहने वाला।
भूतपूर्व	- जो पहले किसी पद पर रह चुका हो।
माँसाहारी	- जो माँस खा लेता हो।
लोकप्रिय	- जो लोगों में प्रिय हो।
विशेषज्ञ	- विशेष जानकारी रखने वाला।
शाकाहारी	- केवल साग-सब्जी खाकर रहने वाला।
सदाचारी	- अच्छा आचरण करने वाला।
सर्वज्ञ	- जो सब कुछ जानता हो।
सहोदर	- एक ही उदर से जन्म लेने वाला।